

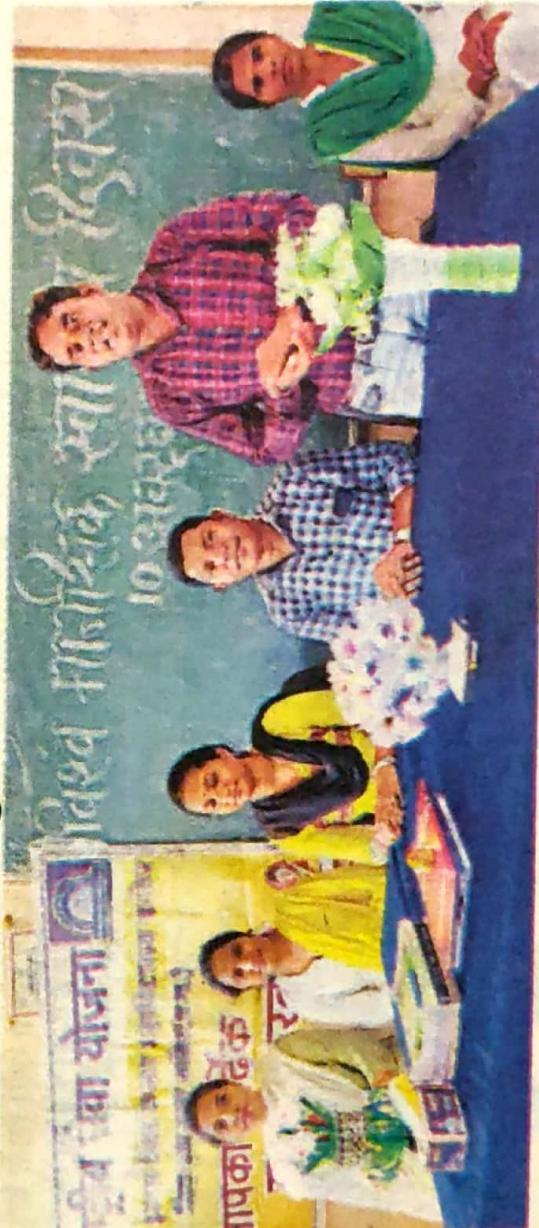
कांकेर पत्रिका

सोशल मीडिया की लत युवाओं को बना रही मनोरोगी : अजय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

कांकेर. मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य एवं हर तरफे के लोगों को इस बीमारी के बारे में भी पता चले इस विषय पर इच्छुक कथ्य कांकेर जैसे जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना और होम सोइंस विभाग की ओर से विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर लोगों को जागरूक किया गया।

गृह विज्ञान के विभागाध्यक्ष ग्रो. अंजय कुमार ने कहा कि हर 40 सेकेंड में एक व्यक्ति की मौत आत्महत्या से होती है। आत्महत्या करने वाले लोगों में 90 फीसदी मनोरोगी होते हैं। विश्व में चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति जीवन के किसी न किसी नोड पर मानसिक विकार से प्रभावित होता है। इससे जीवनशैली में आ रहे बदलाव बड़ा कारण है। सोशल मीडिया पर छाए रहने की सनक युवाओं को मनोरोगी के लिए लोगों को फिल्म जजमेंटल समय से खुद को हेल्पलेस, फेसबुक, इंस्टाग्राम बना रही है। फेसबुक, इंस्टाग्राम



शिक्षक घर एवं स्कूल में रोजमरा की चुनौतियों का मुकाबला करने में सहयोग के लिए बच्चों और किशोरों के जीवन कोशल नियमण करने में मदद कर सकते हैं।

जैसे सामाजिक कौशल, समस्या सुलझाने का कौशल और आनन्दविश्वास बढ़ाना है। संसाधन और सेवाएं उत्पन्न और विकसित करने पर केंद्रित होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक सहयोग स्कूलों और अन्य सामुदायिक स्तरों पर प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा प्रदान किया जा सकता है। युप लीडर छात्रा अंजु नेताम के नेतृत्व में इस विषय पर छात्राओं ने भी अपने विचार रखे एवं क्रीज, प्रश्नोत्तरी, आंकड़ों एवं सोशल मीडिया के प्रभाव पर खुली चर्चा करते हुए एनएसएस कैम्प के मध्यम से इस विषय पर जागरूकता लाने की बात कही। संचालन एवं इनिलश के छात्रा यामिनी व ऋतु ने किया।

चाहिए। अलजाइमर्स, डिमोशिया, डिप्रेशन, सिजोफ्रेनिया, ऑटिज्म, फोबिया जैसे मेंटल हेल्थ इस्यू से एम्स के विशेषज्ञों का कहना है कि सोशल मीडिया पर दो घंटे से ज्यादा बिताना मनोरोग का संकेत है। प्रो. मनोज कुमार ने बताया कि इस विषय पर व्यापक जागरूकता लाने के लिए लोगों को फिल्म जजमेंटल

की कोशिश कुछ फिल्मों में कोई फ्रीटि है। डॉ. वंदना विश्वकर्मा, प्रो. दीपि पटेल, प्रो. जीइस बघेल, प्रो. गायत्री मेश्राम, मनीषा सोनी, प्रो. गायत्री मेश्राम, मनीषा नाग ने जागरूकता के बारे में बताया कि बच्चों के माता-पिता

और होपलेस महसूस लाइक जैसे बीडियो एप भी युवाओं के दिलोदिगम पर हावी हो चुके हैं। एम्स के विशेषज्ञों का कहना है कि सोशल मीडिया पर दो घंटे से ज्यादा सोशल मीडिया के लक्षण को दिखाने सबसे अधिक आत्महत्या 25 से 29 साल के बीच के लोग कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार 21वीं सदी में जीवनशैली में आ रहे बदलाव बड़ा विषय पर व्यापक जागरूकता लाने के लिए लोगों को फिल्म जजमेंटल है। सोशल मीडिया पर छाए रहने की सनक युवाओं को मनोरोगी के लिए लोग ग्रसित होते हैं, जो लंबे वैसे लोग ग्रसित होते हैं, जो लंबे समय से खुद को हेल्पलेस,

Scanned with CamScanner